Module No. 9

दोस्ती

Duration : 03.00

Transcribed words : 546

- संगीत -

रोहित : मेरा नाम रोहित है... और ये मेरी फ्रेंड भाविनी... हम बेसिकली एक ही क्लास के अंदर हैं... एक ही कॉलेज में पढ़ते हैं... तो, और साथ में हमेशा एक साथ, आपस में एक दूसरे के साथ वक्त बिताते हैं...

कृतिका : मेरा नाम कृतिका है... और ये दोनों मेरी अच्छी दोस्त हैं क्योंकि दोनों ही, बहुत ही हैल्पिंग हैं... और, जैसे ये मेरे सीनियर के फ़ियान्से हैं... और बहुत ही जल्दी इनकी शादी भी होगी... ये बहुत अच्छी डिजाईनर है...

आदित्य सिंह रजावत : मेरा नाम आदित्य है... और मैं और संचित कॉलेज से, छः साल से, हम दोनों फ्रेंड हैं... मुझे इनकी सबसे अच्छी बात ये लगती है कि ये बहुत ही सोशल हैं, कॉपरेटिव हैं... इनको कॉलेज में, खूबी, प्रोग्राम ऑरगेनॉईज करना बहुत ही अच्छा लगता है...

गौरव पारिक : मेरा नाम गौरव पारिक है... और मैं रोहित से 2011 में तब इससे पहली बार मिला था, जब हम एक ही जगह रेंट पर रहते थे... और इसका जो बडा भाई है वो मेरा दोस्त था... तो उसके कारण इससे मिलना हुआ और उसके बाद हम, बहुत ज़्यादा, हमारे बीच अच्छी समझ है, एक दूसरे के बारे में और काफी सपोर्टिव हैं, हमें एक दूसरे के लिये...

भाविनी प्रजापति : हम लोगों को काफी समय मिलता है साथ बिताने के लिये, क्योंकि एक ही क्लास में थे... चार साल हमने एक ही कॉलेज में, एक ही क्लास के अंदर समय बिताया है... मैं एप्लाईड से हूँ, ये भी एप्लाईड से है... तो हम दोनों साथ बैठकर, एक दूसरे के आईडियाज शेयर करकर काम करते थे, और करते हैं...

कृतिका : मुझे इनके साथ रहना बहुत पसन्द है... और मुझे बहुत ही प्रिटी लगती है ये... (हँसी की आवाजें) और मैं इन्हें बहुत ही ज़्यादा, यू नो, कापी करती हूँ...

निधि कामा : कापी करती है...

संचित टक्साली : हमारा एक ग्रुप बना अच्छा खासा, जहाँ पर हम लोग मिलते रहते थे... फिर हम वहाँ जाते, मिलते, खूब मजे, मस्ती करते... सबसे बढ़िया बात मुझे भाई की ये लगती थी कि ये मस्त रहते थे और हमेशा एक बात कहते थे... 'भाई, जो कुछ नहीं बना वो बना बना'...

आदित्य सिंह रजावत : बना बना...

निधि कामा : मुझे इन लोगों का नेचर बहुत पसन्द है... ये लोग मेरे को बहुत टीज़ करती हैं... बहुत शैतानियाँ करती हैं... हमेशा छेड़ती रहती हैं... और सबसे अच्छा लगता है कि ये लोग बहुत मेहनती हैं... जब ये लोग फाइन आर्ट में अपना काम करती हैं तो बहुत ही अच्छा लगता है मेरे को...

रोहित : हम लोगों की आदतें सेम हैं... अगर ये भी किसी बात को ले के अड़ती है तो उसी बात को ले के मैं भी अड़ता हूँ, अपना पक्ष रखने के लिये... (हँसते हुये) इस तरह से हम दोनों में काफी झगड़े होते हैं...

आदित्य सिंह रजावत : इनकी सबसे गन्दी चीज़ जो मुझे लगती है वो है कि ये सबसे बडे कंजूस हैं... बहुत बडे कंजूस ...

गौरव पारीक : मेरे को इसकी सबसे गन्दी बात ये लगती है कि ये गोलियाँ बहुत देता है...

आदित्य सिंह रजावत : और जब ये बोलना शुरू करते हैं तो फिर ये रूकते ही नहीं हैं... दूसरों को तो बोलने ही नहीं देते हैं...

- संगीत -